उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग राजकीय इण्टर कालेज प्रवक्ता परीक्षा, 2017
संस्कृतम्
व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र

1. ऋग्वेदे होतारं इति विशेषणमस्ति-

(a) इन्द्रस्य (b) अग्नैः
(c) विष्णोः (d) प्रजापतेः

Ans. (b) : ऋग्वेदे होतारं इति विशेषणम् 'अग्नैः' अस्ति। ऋग्वेदीय देवताओं में अग्नि का सबसे प्रमुख स्थान है। वैदिक आर्यों के लिए देवताओं में इन्द्र के पश्चात् अग्नि का ही पूजनीय स्थान है। वैदिक मन्त्रों के अनुसार अग्निदेव-नेतृत्व शक्ति से सम्पन्न,यज्ञ की आहुतियों को ग्रहण करने वाला तथा तेज एवं प्रकाश का अधिष्ठाता है। ऋग्वेद में अग्नि को घृतपृष्ठ, दमूनस, जातवेदा, यविष्ठय, मेध्य शोचिषकेश, रक्तश्मश्रु, रक्तदन्त, गृहपति,देवदूत, हव्यवाहन, विश्वपति, समिधान, आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

2. 'उरुगायः इति विशेषणमस्ति

(a) विष्णोः (b) प्रजापतेः
(c) इन्द्रस्य (d) अग्नेः

Ans. (a) : 'उरुगायः इति विशेषणं 'विष्णोः' अस्ति। उरुगाय यह विशेषण 'विष्णु' के लिए प्रयुक्त है। उरुगाय का अर्थ है- विस्तीर्ण गति वाला। निरुक्त के अनुसार विष्णु शब्द विष् धातु से बनता है जिसका अर्थ है-व्यापनशील होना, लोक में अपनी किरणों को फैलाने वाला । विष्णु को उरुक्रम, भीम, गिरिष्ठा, गिरिक्षित आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

3. ब्राह्मणग्रन्थाः प्राधान्येन प्रतिपादयन्ति–

(a) देवविज्ञानम् (b) यज्ञविज्ञानम्
(c) ब्रह्मविज्ञानम् (d) उपासनाविधिम्

Ans. (b) : ब्राह्मणग्रन्थाः यज्ञविज्ञानं प्राधान्येन प्रतिपादयन्ति। अर्थात् ब्राह्मणग्रन्थों में यज्ञ विज्ञान की प्रधानता स्वीकार की गयी है। ब्राह्मण ग्रन्थ यज्ञों तथा कर्मकाण्डों के विधान और इनकी क्रियाओं को समझने के लिए आवश्यक होते हैं ब्रह्म शब्द का शाब्दिक अर्थ है-यज्ञ अर्थात् यज्ञ के विषयों का प्रतिपादन करने वाले ग्रन्थ। ये ग्रन्थ गद्य में लिखे गये हैं। इनमें उत्तरकालीन समाज एवं संस्कृति के सम्बन्ध का ज्ञान मिलता है।

4. 'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु इत्ययम्मन्त्रो विद्यते'

(a) शिवसङ्कल्पसूक्ते (b) विश्वेदेवासूक्ते
(c) विष्णुसूक्ते (d) अग्निसूक्ते

Ans. (b) : 'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु' इति मन्त्रो विश्वेदेवासूक्ते विद्यते। अर्थात् हमारे लिए कल्याणकारी विचार आयें। यह श्लोक परक वाक्य विश्वेदेवा सूक्त में वर्णित है। विश्वेदेवा का शाब्दिक अर्थ-'सभी देवताओं' से है। ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में 'विश्वेदेवाः' (सभी देवताओं) की स्तुति की गयी है।

5. पदे परमे मध्व उत्सः अस्ति-

(a) इन्द्रस्य (b) विष्णोः
(c) वरुणस्य (d) सवितुः

Ans. (b) : 'पदे परमे मध्व उत्सः' विष्णोः अस्ति। ऋग्वेद के अनुसार विष्णु के तीन पग मधुमय हैं। विष्णु मनुष्यों का वह मित्र है जो मधुरता का स्रोत है।

6. ज्योतिषम् आधृत्य वेदानां कालं विक्रमपूर्व चतुः सहस्त्रवर्ष निर्धारितवान्-

(a) मैक्समूलरः
(b) बालगङ्गाधर-तिलकः
(c) वासुदेवशरण-अग्रवाल
(d) विण्टरनित्जः

Ans. (b) : ज्योतिष के आधार पर बालगङ्गाधर तिलक ने कृत्तिका नक्षत्र को लेकर वेदों का रचनाकाल ६००० ई. पू. से लेकर ४००० ई. पू. के मध्य निर्धारित किया है।

7. सर्वे शब्दाः मूलतः धातुभ्यः एव उत्पन्नाः इत्यस्य मतस्य प्रवर्तक आचार्यो वर्तते-

(a) पाणिनिः (b) पतञ्जलि
(c) यास्कः (d) शौनकः

Ans. (c) : 'सर्वे शब्दाः मूलतः धातुभ्यः एव उत्पन्नाः इत्यस्य मतस्य प्रवर्तकः आचार्यो यास्कः वर्तते। अर्थात् सभी शब्द मूलतः धातु से उत्पन्न होते हैं। इस मत के प्रवर्तक आचार्य यास्क हैं।

8. कठोपनिषदि नचिकेतसा यमराजं याचितः द्वितीयः वरः आसीत्–

(a) स्वर्गसाधनभूतस्य अग्निविज्ञानस्य उपदेशः
(b) मोक्षसाधनभूतस्य आत्मविज्ञानस्य उपदेशः
(c) क्षुब्ध पितुः सौमनस्यप्राप्तिः
(d) सांसारिक सुखभोगानां प्राप्तिः

Ans. (a) : कठोपनिषदि नचिकेतसा यमराजं याचितः द्वितीयः वरः स्वर्गसाधनभूतस्य अग्निविज्ञानस्य उपदेशः आसीत्। कठोपनिषद् में वर्णित नचिकेता के द्वारा यमराज से माँगा गया दूसरा वर-स्वर्ग की साधनभूत अग्नि विद्या का उपदेश था।

9. 'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते उक्तेरस्याः मूलं स्त्रोतोऽस्ति'

(a) कठोपनिषद् (b) श्रीमद्भगवद्गीता
(c) वेदान्तसार (d) ईशावास्योपनिषद्

Ans. (d) : अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते उक्तेरस्याः मूलं स्रोत 'ईशावास्योपनिषद्' अस्ति। अर्थात् जो विद्या (ज्ञान) और अविद्या (कर्म) इन दोनों को ही एक साथ जानता है, वह अविद्या से मृत्यु को पार करके विद्या से अमरत्व प्राप्त कर लेता है। इस उक्ति का मूल स्रोत ईशावास्योपनिषद् है।

10. सांख्यकारिकानुसारेण रजोगुणः अस्ति-

(a) नियामकः (b) प्रकाशकः

(c) प्रवर्तकः (d) आच्छादकः

Ans. (c) : सांख्यकारिकानुसारेण रजोगुणः 'प्रवर्तकः' अस्ति।अर्थात् सांख्यकारिका के अनुसार रजोगुण का कार्य प्रवर्तन करना है, जबकि सत्वगुण का कार्य प्रकाश करना व तमोगुण का कार्य नियमन करना है।

11. स्याद्वादः सिद्धान्तोऽस्ति-

(a) जैनदर्शनस्य (b) बौद्धदर्शनस्य

(c) न्यायदर्शनस्य (d) चार्वाकदर्शनस्य

Ans. (a) : स्याद्वादः जैनदर्शनस्य सिद्धान्तोऽस्ति। स्याद्वाद जैन दर्शन का सिद्धान्त है। स्याद्वाद या 'अनेकान्तवाद या 'सप्तभङ्गीनय का सिद्धान्त' जैन धर्म में मान्य सिद्धान्तों में से एक है। 'स्याद्वाद' का अर्थ 'सापेक्षतावाद' होता है। यह जैन दर्शन के अन्तर्गत किसी वस्तु के गुण को समझने समझाने और अभिव्यक्त करने का सापेक्षिक सिद्धान्त है।

12. सांख्यदर्शनं प्रमाणं न मनुते-

(a) प्रत्यक्षम् (b) अनुमानम्

(c) आप्तवचनम् (d) उपमानम्

Ans. (d) : सांख्यदर्शनम् उपमानं प्रमाणं न मनुते अर्थात् सांख्यदर्शन उपमान प्रमाण को नहीं मानता। सांख्यदर्शन मुख्यतः 3 प्रमाण मानता है प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द। उपमान प्रमाण की गणना न्याय वैशेषिक दर्शन के अन्तर्गत की जाती है। न्याय-वैशेषिक दर्शन 4 प्रमाण मानता है- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द।

13. सांख्याभिमतायां सृष्टिप्रक्रियायां प्रथमः विकारः अस्ति

(a) अहंकारः (b) महत्

(c) मनः (d) चक्षुः

Ans. (b) : सांख्याभिमतायां सृष्टिप्रक्रियायां 'महत्' प्रथमः विकारः अस्ति। सांख्यमतानुसार सृष्टि प्रक्रिया में प्रथम विकार महत् (बुद्धि) है। महत् की उत्पत्ति मूलप्रकृति से होती है। महत् को बुद्धि, प्रत्यय आदि नामों से भी जाना जाता है।

14. सांख्यदर्शनस्य सिद्धान्तोऽस्ति-

(a) असतः सत् जायते।

(b) एकस्य सतो विवर्त्त कार्यजातं न वस्तुसत् ।

(c) सतः असत् जायते।

(d) सतः सत् जायते।

Ans. (d) : सतः सत् जायते सांख्यदर्शनस्य सिद्धान्तोऽस्ति। अर्थात् सत् से सत् उत्पन्न होता है यह सांख्यदर्शन का सिद्धान्त है।

15. सांख्यदर्शने तन्मात्राणि सन्ति-

(a) त्रीणि (b) पञ्च

(c) चत्वारि (d) षट्

Ans. (b) : सांख्यदर्शने पञ्च तन्मात्राणि सन्ति।

अर्थात् सांख्यदर्शन में पञ्च तन्मात्राएँ हैं।

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, और गन्ध।

16. सांख्यकारिकायां न प्रकृतिर्न विकृतिः इति निरूपितं तत्वमस्ति-

(a) अव्यक्तम् (b) महत्

(c) अहंकारः (d) पुरुषः

Ans. (d) : सांख्यकारिकायां न प्रकृतिर्न विकृतिः इति पुरुषः। सांख्यकारिका में पुरुषः तत्व को न तो प्रकृति और न ही विकृति माना गया है, क्योंकि यह पुरुषतत्त्व न तो किसी तत्त्व से उत्पन्न होता है और न ही किसी तत्त्व को उत्पन्न करता है, इसलिए पुरुष को अनुभयात्मक कहा गया है।

17. सांख्यमते पुरुषोऽस्ति-

(a) त्रिगुणः (b) व्यक्तः

(c) अनित्यः (d) चेतनः

Ans. (d) : सांख्यमते पुरुषः चेतनोऽस्ति। अर्थात् सांख्य मतानुसार चेतन पुरुष या आत्मा ही सुख-दुःख का भोक्ता है। इस प्रकार भोग्य त्रिगुणात्मक संसार को भोक्ता (आत्मा या पुरुष) की आवश्यकता है अर्थात् भोग्य (प्रकृति) को भोक्ता (पुरुष) की अपेक्षा है।यही प्रकृति का प्रयोजन है दूसरी ओर पुरुष या आत्मा विवेक (ज्ञान) से मुक्त होना चाहता है।

18. वेदान्ते अज्ञानेन अनुपहितं चैतन्यमुच्यते-

(a) ईश्वरः (b) प्राज्ञः

(c) विराट् (d) तुरीयम्

Ans. (d) : वेदान्ते अज्ञानेन अनुपहितं चैतन्यं 'तुरीयम्' उच्यते । वेदान्त में अज्ञान से अनुपहित चैतन्य तुरीय है। अज्ञानसमष्टि से उपहित ईश्वर, चैतन्य और अज्ञान व्यष्टि से उपहित प्राज्ञ, चैतन्य का आधारभूत अनुपहित सर्वव्यापी विशुद्ध चैतन्य है उसी को तुरीय (चतुर्थ) कहते हैं। यही अद्वैत वेदान्त का निर्गुण ब्रह्म है जो सगुण ब्रह्म अर्थात् ईश्वर में व्याप्त है।

19. तर्कभाषानुसारेण सविकल्पक प्रत्यक्षस्य करणमस्ति-

(a) इन्द्रियम् (b) इन्द्रियार्थसन्निकर्षः

(c) निर्विकल्पकं ज्ञानम् (d) उपादानबुद्धिः

Ans. (b) : तर्कभाषानुसारेण सविकल्पक प्रत्यक्षस्य करणम् 'इन्द्रियार्थ सन्निकर्षः' अस्ति। तर्कभाषा के अनुसार सविकल्पक प्रत्यक्ष का करण इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष है। साक्षात्कारिणी प्रमा के करण को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं। साक्षात्कारिणी प्रमा का करण तीन प्रकार का होता है।

(i) कभी इन्द्रिय

(ii) कभी इन्द्रिय और अर्थ का सन्निकर्ष

(iii) कभी ज्ञान

20. निर्विकल्पकज्ञानोत्पत्तौ अवान्तरव्यापारो भवति-

(a) इन्द्रियम् (b) इन्द्रियार्थसन्निकर्षः

(c) सविकल्पकं ज्ञानम् (d) उपेक्षाबुद्धिः

Ans.(b) : निर्विकल्पकज्ञानोत्पत्तौ 'इन्द्रियार्थसन्निकर्षः' अवान्तरव्यापारो भवति। इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष उस निर्विकल्पक ज्ञान के उत्पादन में इन्द्रिय का अवान्तर (मध्यवर्ती) व्यापार होता है।
निर्विकल्पक ज्ञान इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष रूप व्यापार के द्वारा इन्द्रिय का फल-कार्य होता है यह भी ठीक वैसे जैसे कटना लकड़ी के साथ फरसे के संयोग रूपी व्यापार द्वारा फरसे का फल कार्य होता है।

21. शब्दस्य प्रत्यक्षे इन्द्रियार्थसन्निकर्षो भवति-

(a) संयोगः (b) संयुक्त समवायः

(c) समवायः (d) समवेत समवायः

Ans. (c) : शब्दस्य प्रत्यक्षे 'समवायः' इन्द्रियार्थ सन्निकर्षो भवति अर्थात् शब्द के प्रत्यक्ष में समवाय इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष होता है जब श्रोत्र (कान) से शब्द का ग्रहण होता है तब श्रोत्र इन्द्रिय होता है, शब्द अर्थ होता है और शब्द के साथ श्रोत्र का समवाय सन्निकर्ष होता है। क्योंकि कान के मध्यभाग में स्थित आकाश ही श्रोत्र कहा जाता है अतः श्रोत्र आकाशस्वरूप है और शब्द आकाश का गुण है, गुण और गुणी के बीच समवाय सम्बन्ध होता है।

22. अभावस्य प्रत्यक्षे इन्द्रियार्थ सन्निकर्षो भवति-

(a) संयोगः (b) समवायः
(c) समवेत समवायः (d) विशेष्यविशेषणभावः

Ans. (d) : अभावस्य प्रत्यक्षे 'विशेष्य-विशेषणभावं' इन्द्रियार्थ सन्निकर्षो भवति। अर्थात् अभाव के प्रत्यक्ष में विशेष्य-विशेषण भाव इन्द्रियार्थसन्निकर्ष होता है। चक्षु से संयुक्तभूतल में घट के अभाव का प्रत्यक्ष होता है जिसे 'इह भूतले घटो नास्ति-'इस भूभाग में घड़ा नहीं है' इस शब्द से व्यवहृत किया जाता है तब घटाभावरूप अर्थ के साथ चक्षु इन्द्रिय का विशेष्य विशेषण भाव सन्निकर्ष होता है।

23. तर्कभाषानुसारेण व्याप्तिर्भवति

(a) द्विविधा (b) त्रिविधा
(c) चतुर्विधा (d) एकविधा

Ans. (a) : तर्कभाषा के अनुसार व्याप्ति के दो भेद हैं- (i) अन्वय व्याप्ति (ii) व्यतिरेक व्याप्ति

व्याप्ति-'साहचर्य नियमो व्याप्तिः'

साहचर्य अर्थात् (साथ-साथ रहना) नियम को व्याप्ति कहते हैं जैसे- 'यत्र यत्र धूमः तत्र तत्र' वह्निः अर्थात् जहाँ-जहाँ धुआँ है, वहाँ वहाँ अग्नि है।

24. तर्कभाषानुसारेण अनुमानं भवति-

(a) एकविधम् (b) द्विविधम्
(c) त्रिविधम् (d) चतुर्विधम्

Ans. (b) : तर्कभाषानुसारेण अनुमानं द्विविधम् भवति । तर्कभाषाकार के अनुसार अनुमान दो प्रकार का होता है।

(a) **स्वार्थानुमान**-स्वार्थं स्वप्रतिपत्ति हेतुः'' अपने ज्ञान (प्रतिपत्ति) का निमित्त स्वार्थानुमान है।

(b) **परार्थानुमान**-पञ्चावयवमनुमानवाक्यं प्रयुङ्क्ते तत् परार्थानुमानम् -अर्थात् 5 अवयवों वाले अनुमान वाक्य का प्रयोग परार्थानुमान है। परार्थानुमान के 5 अवयव हैं-

(i) प्रतिज्ञा
(ii) हेतु
(iii) उदाहरण
(iv) उपनय
(v) निगमन

25. परार्थानुमानवाक्यस्य अवयवो न भवति-

(a) प्रतिज्ञा (b) हेतुः
(c) उदाहरणम् (d) उपाधिः

Ans. (d) : परार्थानुमानवाक्यस्य अवयवो उपाधिः न भवति। अर्थात् परार्थानुमानवाक्य के अवयवों में उपाधि की गणना नहीं की जाती जबकि प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण पञ्च अवयवों में समाहित है।

26. रागः इति पदे प्रत्ययोऽस्ति-

(a) क (b) घञ्
(c) अच् (d) अण्

Ans. (b) : 'रागः' अयम् शब्दः 'रञ्ज्' धातोः भावे घञ् प्रत्ययं कृत्वा सिद्धयति। रागः यह शब्द 'रञ्ज्' धातु के भाव अर्थ में घञ् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है।

27. अतिदेशवाक्यस्य उदाहरणमस्ति-

(a) यथागौस्तथा गवयः।
(b) यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निः।
(c) यत्प्रमेयं तदभिधेयम् ।
(d) यत्कृतकं तदनित्यम् ।

Ans. (a) : 'यथागौस्तथा गवयः' जैसी गाय वैसी नीलगाय

अतिदेश वाक्य (जैसी गाय वैसी नीलगाय) के अर्थ का स्मरण करने के साथ 'गौ' की समानता से युक्त पिण्ड का ज्ञान 'उपमान प्रमाण' है।

जैसे-'यथा गौस्तथा गवयः' वैसी गाय वैसे ही नीलगाय यह अतिदेशवाक्य का उदाहरण है।

28. एषु कतमः स्थितप्रज्ञो न भवति।

(a) यः आत्मन्येव आत्मना तुष्टो भवति।
(b) यः वीतरागभयक्रोधः अस्ति।
(c) यः सांसारिक सुखभोगेषुलिप्तो भवति।
(d) यः सुखदुःखाभ्यां निःस्पृहो भवति।

Ans. (c) : यः सांसारिक सुखभोगेषु लिप्तो भवति। सः मनुष्यः स्थितप्रज्ञो न भवति। अर्थात् जो मनुष्य सांसारिक सुख-भोगों में लिप्त रहता है वह स्थित प्रज्ञ की श्रेणी में नहीं आता। इसके विपरीत जो मनुष्य मन में स्थित सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग देता है, तब वह आत्मा से ही आत्मा में सन्तुष्ट हुआ स्थिर बुद्धि वाला हो जाता है ऐसा आत्मतृप्त महापुरुष ही स्थितप्रज्ञ है।

29. सत्कार्यवादस्य साधकहेतुषु अन्यतमो विद्यते-

(a) त्रैगुण्यविपर्ययः (b) उपादानग्रहणम्
(c) उपलब्धिः (d) अनुमानम्

Ans. (b) : सत्कार्यवादस्य साधकहेतुषु उपादानग्रहणं विद्यते।

अर्थात् सत्कार्यवाद के साधक हेतु में उपादान ग्रहण की गणना की जाती है। उपादान ग्रहण से तात्पर्य किसी कार्य की उत्पत्ति किसी उपयुक्त कारण से हो सकती है। जैसे- तिल से तेल, दूध से दही। इससे स्पष्ट है कि कार्य अपने उपयुक्त कारण में पहले से ही विद्यमान रहता है।

30. 'राजदन्तः' इति पदे समासोऽस्ति-

(a) तत्पुरुषः (b) द्वन्द्वः
(c) बहुव्रीहिः (d) कर्मधारयः

Ans. (a) : 'राजदन्तः' इति पदे तत्पुरुषः समासोऽस्ति। तत्पुरुष समास में प्रायः उत्तरपद की प्रधानता होती है। राजदन्तः में उत्तरपद दन्तः की ही प्रधानता है। पूर्वपद में जो विभक्ति होती है। प्रायः उसी के नाम से ही समास का नाम भी होता है।
यथा - राजदन्तः-दन्तानां राजा-षष्ठी तत्पुरुष समास है।

31. पररुपसन्धेः उदाहरणमस्ति-

(a) प्राच्छीति (b) उपैति
(c) उपैद्यते (d) प्रेजते

Ans. (d) : 'प्रेजते' पररूपसन्धि उदाहरणमस्ति। प्रेजते पररूपसन्धि का उदाहरण है। 'एङि पररूपम्' सूत्र द्वारा यदि अकारान्त उपसर्ग के बाद एङ् (ए, ओ) स्वर जिसके प्रारम्भ में हो ऐसी धातु आये तो दोनों स्वरों (पूर्व एवं पर) के स्थान पर पररूपसन्धि एकादेश अर्थात् क्रमशः ए और ओ हो जाता है।

32. जटाभिस्तापसः इति प्रयोगे जटाभिः इतिपदे तृतीया विभक्ति कारकं सूत्रमस्ति-

(a) हेतौ (b) जनिकर्तुः प्रकृतिः
(c) अपवर्गे तृतीया (d) इत्थम्भूतलक्षणे

Ans. (d) : जटाभिः तापसः इतिपदे तृतीया विभक्ति कारकं सूत्रमस्ति इत्थंभूतलक्षणे अर्थात् जटाओं से तपस्वी प्रतीत होता है। यहाँ मनुष्य सामान्य है, उसमें तापसत्व प्रकार है अर्थात् तापसत्व प्रकार (धर्म) को प्राप्त हुआ मनुष्य, यह इत्थंभूत है। इत्थंभूत 'तपस्विता' का लक्षण है 'जटा' से तापस लक्षित किया जा रहा है अतः 'इत्थंभूतलक्षणे' सूत्र से उसमें तृतीया विभक्ति हुई।

33. गोपः धेनुं पयः दोग्धि -'इति वाक्यस्य कर्मवाच्यं भवति-

(a) गोपेन धेनुः पयं दोग्धि।
(b) गोपेन धनुं पय दुह्यते।
(c) गोपेन धेनुं पयं दुह्यते।
(d) गोपेन धेनुः पयः दुह्यते।

Ans. (d) : गोपः धेनुं पयः दोग्धि -'इति वाक्यस्य कर्मवाच्यं-गोपेन धेनुः पयः दुह्यते भवति। कर्मवाच्य का प्रयोग करने के लिए कर्मवाच्य के कर्त्ता में तृतीया तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग करते हैं। और क्रिया कर्म के अनुसार चलती है।
विशेष-12 धातुओं (नी, हृ, कृष्, वह) को छोड़कर कर्मवाच्य के गौण कर्म में प्रथमा और प्रधान कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। तथा चार अन्य धातुओं के (नी, हृ, कृष्, वह) प्रधान कर्म में प्रथमा, व गौण कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

34. प्राचार्यः इत्यस्मिन् पदे समासोऽस्ति-

(a) प्रादितत्पुरुषः (b) अव्ययीभावः
(c) उपपदतत्पुरुषः (d) बहुव्रीहिः

Ans. (a) : प्राचार्यः इत्यस्मिन् पदे प्रादितत्पुरुषः समासोऽस्ति।
'प्राचार्यः' इस पद में प्रादितत्पुरुष समास है। जिस तत्पुरुष समास का प्रथम पद 'कु' गतिसंज्ञक या 'प्र' आदि होता है उसे 'प्रादि तत्पुरुष समास' कहते हैं।
जैसे– कुपुरुषः - कुत्सित पुरुषः
प्राचार्यः - प्रगतः आचार्यः इत्यादि।

35. 'आचार्यानी' इति शब्दे प्रयुक्तः प्रत्ययोऽस्ति-

(a) ङीप् (b) ङीन्
(c) क्तिन् (d) ङीष्

Ans. (d) : 'आचार्यानी' इस शब्द में ङीष् प्रत्यय का विधान किया गया है। 'षिद्गौरादिभ्यश्च' सूत्र द्वारा आचार्य शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय हुआ। ङीष् में डकार, षकार, का अनुबन्ध लोप होकर आचार्य + ई हुआ। आचार्य को आनुक् का आगम, आचार्य + ङीष् = आचार्यनी रूप बना।

36. 'जनार्दन-शब्दे प्रवृत्तः प्रत्ययोऽस्ति-

(a) ल्युट् (b) ल्युः
(c) ण्वुल् (d) अच्

Ans. (b) : 'जनार्दन-शब्दे 'ल्युः' प्रत्ययोऽस्ति । जनार्दन शब्द में ल्यु प्रत्यय का प्रयोग किया गया है।
'नन्दि-ग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः' सूत्र के अनुसार 'नन्द्' आदि धातुओं में 'ल्यु' प्रत्यय होता है। 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से लकार की इत्संज्ञा होने से केवल 'यु' शेष बचता है, तथा 'युवोरनाकौ' सूत्र से 'यु' को 'अन' आदेश हो जाता है, यथा - जन् अर्द + ल्यु (यु)
जनर्द + यु (अन)
= जनार्दनः ।

37. एषु कतमं सूत्रं प्रगृह्यं संज्ञां न विद्यत्ते -

(a) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (b) अदसो मात्
(c) निपात एकाजनाङ् (d) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्

Ans. (d) : 'प्लुतप्रगृह्या अचिनित्यम् ' प्रगृह्यं संज्ञा न विद्यत्ते। अर्थात् प्लुत और प्रगृह्य के बाद (अच्) स्वर हो तो प्लुत और प्रगृह्य में परिवर्तन नहीं होता है। ये नित्य बने रहते हैं।
जैसे-हरी एतौ यहाँ हरी ईकारान्त द्विवचन होने के कारण 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यं' सूत्र से प्रगृह्य है। प्रगृह्य संज्ञक हरी के बाद एतौ का 'ए' अच् आया है अतः 'प्लुप्तप्रगृह्या अचि नित्यम्' सूत्र से प्रकृतिभाव होकर 'हरी एतौ' ही रहेगा। यह यण् सन्धि का अपवाद है 'इकोयणचि' सूत्र से रकारोत्तरवर्ती ई के स्थान पर यण् प्राप्त था, यण का निषेध करके यहाँ प्रकृतिभाव हुआ है।
शेष विकल्प 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्, अदसो मात, निपात एकाजनाङ् इत्यादि सूत्र प्रगृह्य संज्ञा का विधान करते हैं।

38. संस्कृत व्याकरणानुसारं शकारस्य बाह्यप्रयत्नोऽस्ति-

(a) संवारः नादः घोषः अल्पप्राणः
(b) विवारः श्वासः अघोषः अल्पप्राणः
(c) संवारः नादः घोषः महाप्राणः
(d) विवारः श्वासः अघोषः महाप्राणः

Ans. (d) : संस्कृत व्याकरण के अनुसार शकार का बाह्यप्रयत्न विवार, श्वास, अघोष व महाप्राण है। खर् प्रत्याहार के वर्ण अर्थात् ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, का विवार, श्वास और अघोष यत्न होता है। शकार शल् प्रत्याहार के अन्तर्गत समाहित है। वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ और शल् (श्, ष्, स्, ह्) का प्रयत्न महाप्राण है।

39. वकारस्य उच्चारणस्थानम् अस्ति–

(a) दन्ताः (b) ओष्ठो
(c) दन्तोष्ठम् (d) कण्ठतालुः

Ans. (c) : वकारस्य उच्चारणस्थानं दन्तोष्ठम् अस्ति। अर्थात् वकार का उच्चारण स्थान दन्तोष्ठ है। जबकि ऌ, त वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) ल् और स् का उच्चारण स्थान दन्त है उकार प वर्ग (प्,फ्,ब्,भ्,म्) और उपध्मानीय का उच्चारण स्थान ओष्ठ है तथा ए और ऐ का उच्चारण स्थान कण्ठतालु है।

40. 'सम्बोधने च' इति सूत्रेण विभक्तिर्विधीयते-

(a) प्रथमा (b) षष्ठी
(c) सप्तमी (d) पञ्चमी

Ans. (a) : 'सम्बोधने च' इति सूत्रेण प्रथमा विभक्तिर्विधीयते। सम्बोधन अर्थ में प्रातिपदिक से प्रथमा विभक्ति (सु, औ, जस्) होती है। जैसे - हे राम!

41. अनुक्ते कर्मणि विभक्तिर्भवति-

(a) प्रथमा (b) द्वितीया
(c) तृतीया (d) चतुर्थी

Ans. (b) : अनुक्ते कर्मणि 'द्वितीया' विभक्तिर्भवति ।

अनुक्त (किसी के द्वारा न कहे हुए) कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-हरिं भजति (भक्त हरि को भजता है) यहाँ कर्ता भजन क्रिया के द्वारा हरि को प्राप्त करना चाहता है। अतः कर्त्तुरीप्सिततं कर्म' सूत्र से हरि की कर्म संज्ञा हुई । यहाँ भजति (भज् + तिप्) क्रिया में तिप् प्रत्यय कर्त्ता अर्थ में लगा है अतएव कर्त्ता उक्त है और कर्म अनुक्त। इसलिये 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से अनुक्त कर्म 'हरि' में द्वितीया विभक्ति हो गयी।

42. व्याकरणशास्त्रे वृत्तयः भवन्ति-

(a) त्रिरूपाः (b) चतूरूपाः
(c) पञ्चरूपाः (d) सप्तरूपाः

Ans. (c) : व्याकरणशास्त्रे पञ्चरूपाः वृत्तयः भवन्ति। व्याकरणशास्त्र में वृत्तियों के 5 रूप बताये गये हैं-

(i) कृत् (ii) तद्धित (iii) समास (iv) एकशेष (v) सनाद्यन्त धातुएँ

43. 'वागर्थाविव' इत्यत्र समासोऽस्ति-

(a) केवलः (b) द्वन्द्वः
(c) द्विगुः (d) कर्मधारयः

Ans. (a) : 'वागर्थाविव' इत्यत्र केवल समासोऽस्ति । वागर्थाविव में केवल समास है।

'स च विशेषसंज्ञा विनिर्मुक्तः केवल समासः' अर्थात् विशेष संज्ञा से विनिर्मुक्त समास केवल समास कहलाता है।

44. 'प्रियंवदः' इत्यत्र प्रत्ययोऽस्ति-

(a) खच् (b) खश्
(c) णिनिः (d) क्वनिप्

Ans. (a) : 'प्रियंवदः' इत्यत्र 'खच्' प्रत्ययोऽस्ति। 'प्रियंवदः में खच् प्रत्यय का विधान किया गया है जबकि जनमेयजयः में खश् प्रत्यय का विधान होता है। लघुसिद्धान्त कौमुदी में 'प्रियवशो वदः खच्' सूत्र में प्रिय या वश रूप कर्म के उपपद होने पर वद् धातु से खच् प्रत्यय होता है।

खकार और चकार इत्संज्ञक है, अ ही शेष रहता है। खित् होने के कारण मुम् का आगम होता है।

45. 'कारकः' इत्यत्र प्रत्ययोऽस्ति-

(a) ण्वुल् (b) तृच्
(c) घञ् (d) अण्

Ans. (a) : 'कारकः' इत्यत्र 'ण्वुल्' प्रत्ययोऽस्ति । कृ धातु में 'ण्वुल्तृचौ' सूत्र द्वारा ण्वुल् प्रत्यय, अनुबन्धलोप कृ + वु । वु के स्थान पर 'युवोरनाकौ' सूत्र से अक आदेश होने पर कृ + अक । अचोञ्णिति सूत्र से कृ के ऋकार के स्थान पर वृद्धि आदेश 'स्थानेऽन्तरतमः' सूत्र से ऋ के स्थान पर आदि वृद्धि आदेश। उरण् रपरः सूत्र से ऋ का रपर् होकर कारकः बना।

46. 'ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते' इति प्रयोगः कस्य सूत्रस्य उदाहरणेन निर्दिष्टः -

(a) जनिकर्तुः प्रकृतिः
(b) ध्रुवमपायेऽपादानम्
(c) अपादाने पञ्चमी
(d) पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्

Ans. (a) : 'ब्राह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते यह जनिकर्तुः प्रकृतिः सूत्र का उदाहरण है। जन् धातु के कर्त्ता (अर्थात् जायमान) के कारण की अपादान संज्ञा होती है।

ब्राह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते (ब्रह्मा से प्रजायें उत्पन्न होती हैं) यहाँ जन् धातु (प्रजायन्ते) का कर्त्ता प्रजा है उसका कारण है-ब्रह्मणः अतएव ब्रह्मणः की -'जनिकर्तुः प्रकृतिः' सूत्र द्वारा अपादान संज्ञा हुई और 'अपादाने पञ्चमी' से पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ।

47. 'पत्येशेते' इत्यत्र चतुर्थीविधायकं सूत्रं वार्त्तिको वाऽस्ति-

(a) चतुर्थी सम्प्रदाने।
(b) क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् ।
(c) तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या।
(d) परिक्रियणे सम्प्रदानमन्यरस्याम्।

Ans. (b) : 'पत्येशेते' (वह पति के लिए शयन करती है) यहाँ स्त्री के शयन क्रिया के द्वारा 'पति' का अभिप्राय सिद्ध होने से 'क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्' वार्तिक से उसकी सम्प्रदान संज्ञा और 'चतुर्थी सम्प्रदाने' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति का विधान किया गया है।

48. **'चादयोऽसत्त्वे' इति सूत्रेण संज्ञा विधीयते-**

(a) प्रगृह्यसंज्ञा (b) उपसर्ग संज्ञा
(c) निपात संज्ञा (d) टि संज्ञा

Ans. (c) : 'चादयोऽसत्त्वे' इतिसूत्रेण 'निपात संज्ञा' विधीयते । द्रव्यभिन्न अर्थ में वर्तमान 'च' आदि की निपात संज्ञा हो।
च, वा और ह आदि को चादि कहा गया है। जब च आदि का अर्थ द्रव्य या सत्त्व न हो तो इन्हें निपात कहते हैं। जैसे-चन्द्रमा, चोर और कच्छप में च द्रव्य के अर्थ में प्रयुक्त है अतः यहाँ पर च की निपात संज्ञा नहीं है लेकिन यदि च का अर्थ 'और' होगा तो वह निपात होगा क्योंकि यह च द्रव्य या सत्त्व के अर्थ में प्रयुक्त नहीं है।

49. **'गव्यूतिः' इत्यत्र प्रयोगसिद्धिः केन सूत्रेण वार्त्तिकेन वा जायते-**

(a) वान्तो यि प्रत्यये
(b) अध्वपरिमाणे च
(c) यथासंख्यमनुदेशः समानाम्
(d) एचोऽयवायावः

Ans. (b) : 'गव्यूतिः' इत्यत्र प्रयोगसिद्धिः
'अध्वपरिमाणे च' इति वार्तिकेन जायते।
'गव्यूतिः' गो + यूतिः अर्थात् गो के बाद अध्वपरिमाण अर्थात् मार्ग का दूरी वाचक शब्द हो तो गो के ओ के स्थान पर अव् आदेश हो जाता है। उदाहरणार्थ- गो + यूतिः यूति का अर्थ है दो कोश।
अमरकोश में कहा गया है- ''गव्यूतिः स्त्री कोशयुगम्''। यहाँ पर गो के बाद मार्ग का परिमाणवाचक यूति (दो कोस) है अतः 'अध्वपरिमाणे च' वार्तिक द्वारा गो के ओ के स्थान पर अव् आदेश होकर गव्यूतिः रूप सिद्ध हुआ।

50. **अर्थादेशस्य उदाहरणमस्ति–**

(a) देवानां प्रियः (b) गवेषणा
(c) प्रवीणः (d) कुशलः

Ans. (a) : 'देवानां प्रियः' अर्थादेशस्य उदाहरणमस्ति । अर्थादेश का उदाहरण 'देवानां प्रियः' है। जब शब्द अपने मूल अर्थ को त्यागकर दूसरा अर्थ ग्रहण कर लें तब उसे अर्थादेश कहा जाता है।

51. **'सिंहः' इति उदाहरणमस्ति-**

(a) वर्णविपर्ययस्य (b) वर्णलोपस्य
(c) वर्णागमस्य (d) वर्णविकारस्य

Ans. (a) : 'सिंहः' इति वर्णविपर्ययस्य उदाहरणमस्ति। अर्थात्- 'सिंहः' वर्ण विपर्यय का उदाहरण है।
भाषा-विज्ञान में वह अवस्था जब किसी शब्द के वर्ण आगे-पीछे हो जाते हैं और एक दूसरे का स्थान ग्रहण कर लेते हैं उसे 'वर्ण- विपर्यय' कहते हैं जैसे- 'हिंस' शब्द से बने 'सिंह' शब्द में हुआ है।

52. **धर्मशब्दस्य 'धम्म' इति प्राकृत रूपान्तरणे भाषावैज्ञानिकः नियमोऽस्ति–**

(a) तालव्यनियमः (b) सादृश्यम्
(c) विषयीकरणम् (d) समीकरणम्

Ans. (d) : धर्मशब्दस्य 'धम्म' इति प्राकृत रूपान्तरणे भाषावैज्ञानिकः समीकरणं नियमोऽस्ति । 'धर्म' शब्द का 'धम्म' इसका प्राकृत रूपान्तरण भाषा विज्ञान में समीकरण नियम के अन्तर्गत समाहित है। समीकरण से तात्पर्य एक ध्वनि का दूसरी ध्वनि को अपना रूप प्रदान करना अर्थात् जब दो भिन्न ध्वनियाँ पास रहने पर सम हो जाती है उसे समीकरण कहते हैं। समीकरण 2 प्रकार का होता है-
(1) पुरोगामी - अग्नि - अग्गि
(2) पश्चगामी - धर्म - धम्म

53. **भाषायाः आकृतिमूलके वर्गीकरणे अयं विभागः अन्तर्निहितः**

(a) श्लिष्टयोगात्मक विभागः (b) भारत-ईरानीय विभागः
(c) तोखारियन भाषा (d) ग्रीकभाषा

Ans. (a) : भाषायाः आकृतिमूलके वर्गीकरणे श्लिष्टयोगात्मक विभागः अन्तर्निहितः । भाषा के आकृतिमूलक वर्गीकरण में श्लिष्ट योगात्मक विभाग समाहित है। आकृतिमूलक वर्गीकरण में उन भाषाओं को एक वर्ग में रखा जाता है जिनमें पदों, वाक्यों या ध्वनियों की रचना का ढंग एक जैसा होता है।

54. **'श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिव धनम्' इति उक्तमस्ति-**

(a) हर्षचरिते (b) नैषधीयचरिते
(c) रत्नावल्याम् (d) काव्यप्रकाशे

Ans. (d) : 'श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिव धनम्' इति काव्यप्रकाशे उक्तमस्ति। अर्थात् काव्य का निर्माण कवि को कालिदास आदि के समान यश की प्राप्ति नैषध महाकाव्य के प्रणेता महाकवि श्री हर्ष से नहीं अपितु 'रत्नावली नाटिका' के प्रणेता राजा श्रीहर्ष आदि से धावक आदि (पण्डितों) के समान धन की प्राप्ति कराता है। यह उक्ति काव्य प्रयोजन से सम्बन्धित है।

55. **काव्यप्रकाशे 'विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिरात्' इत्यादि उदाहरणमस्ति–**

(a) व्यङ्ग्यकाव्यस्य (b) शब्दचित्रस्य
(c) अर्थचित्रस्य (d) गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य

Ans. (c) : काव्यप्रकाशे 'विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिरात्' अर्थचित्रस्य उदाहरणमस्ति।
काव्यप्रकाश में विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिरात् चित्रकाव्य के अर्थचित्र का उदाहरण है। व्यङ्ग्य अर्थ से भेद रहित होने पर ही चित्रकाव्य होता है।

56. **अभिधामूलायां शाब्दीव्यञ्जनायां स्थाणुंभज भवच्छिदे इत्यस्यार्थः एकस्मिन् पक्षे नियन्त्र्यते-**

(a) संयोगद्वारा (b) साहचर्यद्वारा
(c) सामर्थ्यद्वारा (d) अर्थद्वारा

Ans. (d) : अभिधामूलायां शाब्दीव्यञ्जनायां स्थाणुंभज भवच्छिदे इत्यस्यार्थः अर्थ द्वारा एकस्मिन् पक्षे नियन्त्र्यते ।

57. **रसनिष्पत्तिप्रसङ्गे साधारणीकरणसिद्धान्तस्य प्रथमः प्रतिपादकः आचार्यः आसीत्–**

(a) भट्टलोल्लटः (b) भट्टनायकः
(c) अभिनवगुप्तः (d) भट्टोद्भटः

Ans. (b) : रसनिष्पत्तिप्रसङ्गे साधारणीकरणसिद्धान्तस्य प्रथमः प्रतिपादकः आचार्यः 'भट्टनायकः' आसीत् । अर्थात् रसनिष्पत्ति के प्रसङ्ग में साधारणीकरण सिद्धान्त के प्रथम प्रतिपादक आचार्य भट्टनायक थे। भट्टनायक ने सामाजिक को होने वाली साक्षात्कारात्मक रसानुभूति के लिए एक नये ही मार्ग का अवलम्बन किया है। जिसे साहित्यशास्त्र में 'भुक्तिवाद' नाम से जाना जाता है भुक्तिवाद का आशय है- रस की 'निष्पत्ति' न अनुकार्य राम आदि में होती है और न अनुकर्ता नट आदि में। अनुकार्य और अनुकर्ता दोनों तटस्थ हैं, उदासीन हैं। उनको रसानुभूति नहीं होती है। वास्तविक रसानुभूति सामाजिक को होती है । भट्टनायक के इस 'भुक्तिवाद' को व्याख्याकारों ने सांख्यमतानुयायी सिद्धान्त माना है।

58. उपमानेन उपमेयस्य निगरणरूपे अध्यवसाये सिद्धे सति अलङ्कारो भवति-

(a) उत्प्रेक्षा (b) समासोक्तिः
(c) अतिशयोक्तिः (d) निदर्शना

Ans. (c) : उपमानेन उपमेयस्य निगरणरूपे अध्यवसाये सिद्धे 'अतिशयोक्तिः' अलङ्कारो भवति। अर्थात् उपमान के द्वारा भीतर निगल लिये गये (अर्थात् पृथक् न कहे हुए) उपमेय का जो अध्यवसान होता है वहाँ अतिशयोक्ति नामक अलङ्कार होता है।

59. 'गाम्भीर्यगरिमा तस्य सत्यं गङ्गाभुजङ्गवत् इत्यत्र अलङ्कारो वर्तते-'

(a) तद्धितगा श्रौती पूर्णोपमा
(b) समासगा श्रौती पूर्णोपमा
(c) समासगा आर्थी पूर्णोपमा
(d) तद्धितगा आर्थी पूर्णोपमा

Ans. (a) : गाम्भीर्यगरिमा तस्य सत्यं गङ्गाभुजङ्गवत् इत्यत्र तद्धितगा श्रौती पूर्णोपमा अलङ्कारो वर्तते। अर्थात् उस राजा के गाम्भीर्य की गरिमा सचमुच (गङ्गा के उपपति) अर्थात् समुद्र के समान है।
यहाँ 'गङ्गाभुजङ्ग' अर्थात् 'समुद्र' उपमान तथा 'तस्य' उपमेय एव 'गाम्भीर्यगरिमा' साधारणधर्म तथा 'गङ्गाभुजङ्गस्य' इव इति गङ्गाभुजङ्गवत् इस विग्रह में 'तत्र तस्यैव' सूत्र द्वारा षष्ठ्यन्त 'गङ्गाभुजङ्गस्य' पद से इव के अर्थ में वति प्रत्यय होने से तद्धितगा श्रौती पूर्णोपमा अलङ्कार बनता है।

60. सः काव्यविशेषः ध्वनिकाव्यम् इति उच्यते–

(a) यत्र वाचकः शब्दः वाच्यार्थश्च प्रधानीभूतौ।
(b) यत्र वाचकः शब्दः वाच्यार्थश्च गौणीभूतौ।
(c) यत्र व्यङ्ग्योऽर्थः गौणीभूतः
(d) यत्र तात्पर्यार्थ प्रधानीभूतः

Ans. (a) : यत्र वाचकः शब्दः वाच्यार्थश्च प्रधानीभूतौ सः काव्यविशेषः ध्वनिकाव्यम् इति उच्यते। अर्थात् जहाँ अर्थ अपने को तथा शब्द अपने अर्थ को गुणीभूत कर लेता है उस प्रतीयमान् अर्थ को ध्वनि काव्य कहते हैं। वाचक शब्द तथा वाच्यार्थ अपने अर्थ को गुणीभूत कर लेता है वह ध्वनि काव्य है।

61. नाट्ये फलागमस्य गणना क्रियते-

(a) अर्थप्रकृतिषु (b) कार्यावस्थासु
(c) नाट्यसन्धिषु (d) अर्थोपक्षेपकेषु

Ans. (b) : नाट्ये फलागमस्य गणना कार्यावस्थासु क्रियते। नाटक में फलागम की गणना कार्यावस्थाओं में की जाती है । कार्यावस्था के मुख्यतः 5 प्रकार हैं- (i) आरम्भ (ii) यत्न (iii) प्राप्त्याशा (iv) नियताप्ति (v) फलागम।

62. रूपकेषु भूतानां भाविनां वा वृत्तानां सूचना यत्र मध्यकोटिकपात्रैः प्रदीयते तदुच्यते-

(a) विष्कम्भकः (b) प्रवेशकः
(c) अङ्कास्यम् (d) आकाशभाषितम्

Ans. (a) : भूतभविष्यकालस्य कथानां सूचकः कथानां संक्षेपक, अङ्कस्यारम्भे च प्रयुक्तः अर्थोपक्षेपकः 'विष्कम्भकः' इति ज्ञायते। शुद्धः, मिश्रः च भेदयोः द्विधैषः । अर्थात् भूत एवं भविष्यकाल की कथाओं का सूचक तथा कथा को संक्षेप में कहने वाला अङ्क के आरम्भ में प्रयुक्त अर्थोपक्षेपक को विष्कम्भक कहते हैं। विष्कम्भक के दो भेद हैं–
(1) शुद्ध विष्कम्भक-जैसे मालतीमाधवम् नाटक के पञ्चम् अङ्क में कपालकुण्डला द्वारा प्रयोग।
(2) मिश्र विष्कम्भक-जैसे रामाभिनन्दन में क्षपणक और कापालिक।

63. साहित्यदर्पणकारेण काव्यलक्षण विवेचने नित्यानित्यदोषव्यवस्थायाः पुष्टिः कारिता-

(a) नाट्यशास्त्रात् (b) काव्यालङ्कारात्
(c) काव्यप्रकाशात् (d) ध्वन्यालोकात्

Ans. (c) : काव्यप्रकाश के लिए नित्यानित्य दोषव्यवस्था की पुष्टि साहित्यदर्पणकार ने अपने काव्यलक्षण- 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' में विवेचना की है।

64. काव्यभेदेषु मध्यमस्य संज्ञा अस्ति

(a) ध्वनिः (b) गुणीभूतव्यङ्ग्यम्
(c) अर्थचित्रम् (d) शब्दचित्रम्

Ans. (b) : काव्यभेदेषु गुणीभूतव्यङ्ग्यम् मध्यमस्य संज्ञा अस्ति। अर्थात् वाच्य और व्यङ्ग्य दोनों जहाँ समान स्थिति में हो, वहाँ भी व्यङ्ग्य के वाच्यातिशायी न होने के कारण गुणीभूतव्यङ्ग्य नामक मध्यम काव्य होता है।

65. 'आयुरेवेदम्' इत्यत्र लक्षणाभेदोऽस्ति।

(a) साध्यवसाना उपादानलक्षणा
(b) सारोपा लक्षणलक्षणा
(c) साध्यवसाना लक्षणलक्षणा
(d) साध्यवसाना गौणीलक्षणा

Ans. (a) : 'आयुरेवेदम्' इत्यत्र साध्यवसाना उपादानलक्षणा भेदोऽस्ति। अर्थात् 'आयुरेवेदम्' में आरोप्य विषय घृत के शब्दतः उपात्त न होने अर्थात् अपह्नुत-स्वरूप होने से साध्यवसाना उपादान-लक्षणा होती है।

66. 'रस उत्पद्यते' इति मतमस्ति-

(a) भट्टलोल्लटस्य (b) श्रीशङ्कुकस्य
(c) भट्टनायकस्य (d) अभिनवगुप्तस्य

Ans. (a) : 'रस उत्पद्यते' इति भट्टलोल्लटस्य मतमस्ति। भरत-सूत्र के व्याख्याकारों में भट्टलोल्लट उत्पत्तिवाद को मानने वाले हैं। उनके मत में विभाव, अनुभाव, आदि के संयोग से अनुकार्य राम आदि में रस की उत्पत्ति होती है। उनमें भी विभाव सीता आदि मुख्यरूप से रस के उत्पादक होते हैं। अनुभाव उस उत्पन्न हुए रस को बोधित करने वाले होते हैं और व्यभिचारिभाव उस उत्पन्न रस के परिपोषक होते हैं। अतः स्थायिभाव के साथ विभावों का उत्पाद्य-उत्पादक भाव, अनुभावों का गम्य-गमकभाव और व्यभिचारिभावों का पोष्य-पोषकभाव सम्बन्ध होता है।

67. 'सर्वत्र विहितस्थितिः' इति मम्मटोक्तेर्विषयोऽस्ति

(a) माधुर्यगुणः (b) ओजगुणः
(c) प्रसादगुणः (d) श्लेषः

Ans. (c) : 'सर्वत्र विहितस्थितिः' इति मम्मटोक्तेर्विषयो प्रसादगुणः अस्ति। अर्थात् सब रसों में रहने वाला गुण 'प्रसादगुण' कहलाता है। जैसे सूखे ईंधन में अग्नि सहसा व्याप्त हो जाती है, अथवा स्वच्छ धुले हुए वस्त्र में जल सहसा व्याप्त हो जाता है, उसी प्रकार जो चित्त में सहसा अनायास व्याप्त हो जाता है वह प्रसाद नामक गुण कहलाता है। और वह सारे रसों में और सारी रचनाओं में रहता है।

68. मम्मटस्य काव्य लक्षणे बहु दोषदर्शनं कृतम्-

(a) साहित्यदर्पणकारेण (b) ध्वन्यालोककारेण
(c) वक्रोक्तिजीवितकारेण (d) व्यक्तिविवेककारेण

Ans. (a) : मम्मटस्य काव्य लक्षणे साहित्यदर्पण कारेण बहुदोष दर्शनं कृतम् । आचार्य मम्मट के काव्यलक्षण में साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने बहुत से दोषों को देखा।

69. ''कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने । नमोऽस्त्ववार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे॥ इत्यस्मिन् श्लोकेऽलङ्कारोऽस्ति–

(a) विभावना (b) विशेषोक्तिः
(c) विनोक्तिः (d) दृष्टान्तः

Ans. (b) : ''कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने । नमोऽस्त्ववार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे॥ इत्यस्मिन् श्लोके विशेषोक्ति अलङ्कारोऽस्ति। अर्थात् जो (कामदेव) कपूर के समान भस्म हो जाने पर भी जन-जन में शक्तिमान हो गया है, उस अप्रत्याहत पराक्रम वाले कामदेव को नमस्कार है। यहाँ भस्म हो जाना शक्तिक्षय का कारण है। उसके विद्यमान होने पर भी कामदेव की शक्ति का क्षय नहीं हुआ है। कारण के होने पर भी कार्य के न होने से विशेषोक्ति अलङ्कार है।

70. विश्वनाथकविराजमतेन रीतयः सन्तिः–

(a) तिस्रः (b) चतस्रः
(c) पञ्च (d) षट्

Ans. (b) : अलङ्कारः विश्वनाथकविराजमतेन चतस्रः रीतयः सन्ति। विश्वनाथ कविराज के मतानुसार रीतियों के 4 भेद हैं-

(1) वैदर्भी (2) गौड़ी
(3) पाञ्चाली (4) लाटी

71. रूपकाणां भेदको नास्ति-

(a) वस्तु (b) नेता
(c) रसः (d) अलङ्कारः

Ans. (d) : रूपकाणां भेदको नास्ति। रूपकों के भेदों में अलङ्कार की गणना नहीं की जाती। जबकि वस्तु, नेता, रस में तीनों रूपक के अन्तर्गत समाहित हैं।

72. ''नेदं नभोमण्डलमम्बुराशिर्नैताश्च तारा नवफेनभङ्गः। नाऽयं शशी कुण्डलितः पूर्णीन्द्रो, नाऽसौ कलङ्कः शयितो मुरारिः॥ इत्यस्मिन् श्लोके अलङ्कारोऽस्ति-

(a) सन्देहः (b) भ्रान्तिमान
(c) अपह्नुतिः (d) उत्प्रेक्षा

Ans. (b) : ''नेदं नभोमण्डलमम्बुराशिर्नैताश्च तारा नवफेनभङ्गः। नाऽयंशशी कुण्डलितः पूर्णीन्द्रो, नासौ कलङ्कः शयितो मुरारिः।। इत्यस्मिन् श्लोके भ्रान्तिमान अलङ्कारोऽस्ति । अप्राकरणिक वस्तु के समान प्राकरणिक वस्तु के देखने पर जिसमें अन्य वस्तु का भान होता है वह भ्रान्तिमान अलङ्कार कहलाता है।

73. मम्मटानुसारेण काव्यप्रयोजनेषु मौलिभूतमस्ति-

(a) यशः
(b) शिवेतरक्षतिः
(c) कान्तासम्मितोपदेशः
(d) सद्यः परनिर्वृत्तिः

Ans. (d) : मम्मटानुसारेण काव्यप्रयोजनेषु सद्यः परनिर्वृत्तिः मौलिभूतमस्ति। मम्मट के मतानुसार काव्यप्रयोजनो में सबसे मुख्य प्रयोजन 'सद्यः परनिर्वृत्तिः' अर्थात् काव्य के निर्माण अथवा पाठ के साथ ही जो एक विशेष प्रकार के आनन्द की प्राप्ति होती है वह अलौकिक आनन्दानुभूति ही काव्य का सबसे मुख्य प्रयोजन है।

74. मम्मटाभिमते गुणानां संख्या अस्ति–

(a) दश (b) नव
(c) अष्टौ (d) त्रयः

Ans. (d) : मम्मटाभिमते गुणानां संख्या त्रयः अस्ति। आचार्य मम्मट ने गुणों की संख्या तीन मानी है–

(i) माधुर्य
(ii) ओज
(iii) प्रसाद

75. ''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः''- सूत्रस्यास्य व्याख्याकारेषु मम्मटस्याभिमतं कुत्र वर्तते-

(a) भट्टलोल्लटे (b) श्रीशङ्कुके
(c) भट्टनायके (d) अभिनवगुप्तपादाचार्ये

Ans. (d) : ''विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगादरसनिष्पत्तिः''

सूत्र के व्याख्याकारों में आचार्य मम्मट के अभिमत का वर्णन अभिनवगुप्त के अभिव्यक्तवाद में मिलता है।

भरत-नाट्यशास्त्र के चतुर्थ किन्तु सर्वप्रमुख व्याख्याकार अभिनवगुप्त ने 'अभिव्यक्तिवाद' की स्थापना की है। जिस प्रकार भट्टलोल्लट ने उत्तरमीमांसा के श्री शंकुक ने न्याय के और भट्टनायक ने सांख्य के आधार पर अपने-अपने मतों की स्थापना की है उसी प्रकार अभिनवगुप्त ने अपने पूर्ववर्ती अलङ्कारशास्त्र के प्रमुख ध्वनिवादी आचार्य आनन्दवर्धन के आधार पर अपने 'अभिव्यक्तिवाद' का प्रतिपादन किया है।

76. तात्पर्यार्थोऽपि मन्यते-

(a) अभिहितान्वयवादिभिः (b) अन्विताभिधानवादिभिः
(c) व्यञ्जनावादिभिः (d) न कश्चिदपि

Ans. (a) : तात्पर्यार्थोऽपि अभिहितान्वयवादिभिः मन्यते। तात्पर्यार्थ अभिहितान्वयवादियों का मत है। किन्हीं कुमारिलभट्ट के अनुयायी पार्थसारथि मिश्र आदि (अभिहितान्वयवादी मीमांसको) के मत में (तीन प्रकार के वाच्यादि अर्थों के अतिरिक्त चौथे प्रकार का) तात्पर्यार्थ भी होता है। अभिहितान्वयवाद का अभिप्राय यह है कि पहले पदों से पदार्थों की प्रतीति होती है। उसके बाद उन पदार्थो का परस्पर सम्बन्ध जो पदों से उपस्थित नहीं हुआ था।

वाक्यार्थ-मर्यादा से उपस्थित होता है। इसलिए पहिले पदों के द्वारा पदार्थ अभिहित अर्थात् अभिधा शक्ति द्वारा बोधित होते हैं बाद में वक्ता के तात्पर्य के अनुसार उनका परस्पर अन्वय या सम्बन्ध होता है जिससे वाक्यार्थ की प्रतीति होती है। इस प्रकार वाक्यार्थ बोध के लिए अभिहित पदार्थों का अन्वय मानने के कारण कुमारिलभट्ट आदि का यह सिद्धान्त 'अभिहितान्वयवाद' कहा जाता है।

77. काव्यस्वरूपे 'अनलङ्कृती' इति पदस्य वास्तविक अभिप्रायः अस्ति

(a) अलङ्कारहितौ (b) अलङ्कारसहितौ
(c) अलङ्कारस्याप्राधान्ययुक्तौ (d) रसप्राधान्ययुक्तौ

Ans. (c) : काव्यस्वरूपे 'अनलङ्कृती' इति पदस्य वास्तविक अभिप्रायः अलङ्कारस्याप्राधान्ययुक्तौ अस्ति। काव्य के स्वरूप में 'अनलङ्कृती' इस पद का वास्तविक अभिप्राय 'अलङ्कार' की प्रधानता से युक्त होने से है। काव्य के स्वरूप में 'शब्दार्थौ' का अन्तिम विशेषण 'अनलङ्कृती' दिया है। उसका अभिप्राय यह है साधारणतः सालङ्कार शब्दार्थ काव्य में प्रयुक्त होने चाहिए परन्तु जहाँ रसादि की स्पष्ट प्रतीति हो, वहाँ कभी-कभी अलङ्काररहित शब्द और अर्थ के होने पर भी काव्यत्व की हानि नहीं होती है।

78. सन्ध्यङ्गानां प्रयोजनानि भवन्ति-

(a) अष्टौ (b) षट्
(c) दश (d) द्वादश

Ans. (b) : सन्ध्यङ्गानां 'षट्' प्रयोजनानि सन्ति। सन्ध्यङ्गों के 6 प्रयोजन हैं–

(i) इष्ट अर्थ की रचना
(ii) गोपनीय को गुप्त रखना
(iii) प्रकाशन
(iv) अभिनय में राग
(v) काव्य का वैचित्र्य
(vi) इतिवृत्त का विच्छिन्न न होना।

79. अर्थोपक्षेपकाः कतिसंख्यायाः भवन्ति–

(a) पञ्च (b) सप्त
(c) अष्टौ (d) षड्

Ans. (a) : अर्थोपक्षेपकाः 'पञ्च' संख्यायाः भवन्ति।

अर्थोपक्षेपक के मुख्यतः 5 प्रकार हैं-

(i) विष्कम्भक
(ii) चूलिका
(iii) अंकास्य
(iv) अङ्कावतार
(v) प्रवेशक

80. 'प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा तु----' इति लक्षणमस्ति-

(a) अतिशयोक्तेः (b) दृष्टान्तस्य
(c) विरोधाभासस्य (d) अपह्नुतिः

Ans. (d) : 'प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सा तु 'अपह्नुतिः' लक्षणमस्ति।

प्रकृत (अर्थात् उपमेय) का निषेध करके जो अन्य (अर्थात् उपमान) की सिद्धि की जाती है वह अपह्नुति (अलङ्कार कहलाता) है।

81. '-----अन्यसंवित् तत्तुल्यदर्शने इत्यत्र रिक्त स्थानं पूरयत-

(a) दृष्टान्तः (b) तुल्ययोगिता
(c) भ्रान्तिमान (d) परिसंख्या

Ans. (c) : भ्रान्तिमानान्यसंवित् तत्तुल्यदर्शने । उस (अन्य अप्राकरणिक वस्तु) के समान (प्राकरणिक वस्तु) के देखने पर जो अन्य वस्तु (अप्राकरणिक अर्थ) का मान होता है वह भ्रान्तिमान (अलङ्कार) कहलाता है।

82. 'अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठे वर्णिताऽऽद्या सृष्टिरस्ति-

(a) वायुः (b) अग्निः
(c) पृथिवी (d) जलम्

Ans. (d) : 'अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नान्दीपाठे वर्णिताऽऽद्या सृष्टि 'जलम्' अस्ति। अभिज्ञानशाकुन्तल के नान्दीपाठ में वर्णित विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि है- जल (अर्थात् जलरूप मूर्ति)।

83. मृच्छकटिके प्रथमस्य अङ्कस्य नाम अस्ति

(a) अलङ्कारन्यासः (b) द्यूतकर संवाहकः
(c) मदनिकाशर्विलकः (d) व्यवहारः

Ans. (a) : मृच्छकटिके प्रथमस्य अङ्कस्य नाम 'अलङ्कारन्यासः' अस्ति।

शूद्रक विरचित मृच्छकटिक नाटक के प्रथम अङ्क का नाम 'अलङ्कारन्यास' है। जिसमें चारुदत्त की दरिद्रता का मार्मिक चित्रण मिलता है।

84. 'पञ्चमोवेदः' इति ख्यातोऽस्ति-

(a) रामायणम् (b) श्रीमद्भागवतम्
(c) विष्णुपुराणम् (d) महाभारतम्

Ans. (d) **:** महाभारतं 'पञ्चमोवेदः' इति ख्यातोऽस्ति। महाभारत को हिन्दू धर्म में 'पञ्चमवेद' कहा गया है। यह काव्यग्रन्थ भारत का अनुपम, धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक ग्रन्थ है।

85. न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात् उक्तिरियं वर्तते-

(a) मृच्छकटिके (b) अभिज्ञानशाकुन्तले
(c) उत्तररामचरिते (d) मेघदूते

Ans. (b) **:** न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात् । यह उक्ति 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अङ्क में मिलती है। जिसका अर्थ है- कान्ति से दैदीप्यमान तेज (भूतल) से उत्पन्न नहीं होता । यह सूक्तिपरक वाक्य दुष्यन्त के द्वारा कथित है।

86. 'दिष्ट्याऽपरिहीनराजधर्मः खलु स राजा-उक्तिरियम् अस्ति उत्तररामचरिते-

(a) आत्रेय्याः (b) वासन्त्याः
(c) सीतायाः (d) तमसायाः

Ans. (c) **:** 'दिष्ट्याऽपरिहीनराजधर्मः खलु स राजा' यह उक्ति 'उत्तररामचरितम्' में 'सीता के द्वारा' कही गयी है। जिसका अर्थ है 'सौभाग्य से वे राजा धर्म-हीन नहीं हुए हैं।'

87. 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्' उक्तिरियम् अस्ति उत्तररामचरिते-

(a) सीतायाः (b) तमसायाः
(c) वासन्त्याः (d) मुरलायाः

Ans. (b) **:** 'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्' यह उक्ति उत्तररामचरितम्' नाटक के तृतीय अङ्क में 'तमसा द्वारा' कही गयी है जिसका अर्थ है- एक करुण रस ही है जो कारण-भेद से भिन्न होकर पृथक्-पृथक् परिणामों को प्राप्त कराता सा प्रतीत होता है।

88. श्रीमद्भगवद्गीता उक्ता वर्तते महाभारतस्य-

(a) सभापर्वणि (b) भीष्मपर्वणि
(c) शान्तिपर्वणि (d) स्वर्गारोहणपर्वणि

Ans. (b) **:** श्रीमद्भगवद्गीता महाभारतस्य भीष्मपर्वणि वर्तते। श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्म पर्व में वर्णित है। भीष्म पर्व के अन्तर्गत 4 उपपर्व और कुल 122 अध्याय हैं। महाभारत के भीष्म पर्व में ही श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया है।

89. अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः इतीयमुक्तिरस्ति'

(a) दुष्यन्तस्य (b) शकुन्तलायाः
(c) कण्वस्य (d) विदूषकस्य

Ans. (a) **:** अभिज्ञानशाकुन्तलनाटके 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः 'दुष्यन्तस्य' उक्तिरस्ति।
अर्थात् सज्जनों के लिए संदेह की स्थिति में उनके अन्तःकरण की प्रवृत्ति ही प्रमाण होती है। अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक में यह उक्ति दुष्यन्त के द्वारा कही गयी है।

90. किरातार्जुनीयमहाकाव्ये हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः इतीयमुक्तिरस्ति-

(a) वनेचरस्य (b) द्रौपद्याः
(c) युधिष्ठिरस्य (d) भीमसेनस्य

Ans. (a) **:** किरातार्जुनीयमहाकाव्ये हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः 'वनेचरस्य' उक्तिरस्ति।
किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में हितकारी तथा मन को प्रिय लगने वाले वचन को दुर्लभ बताया गया है यह कथन वचेनर के द्वारा कहा गया है।

91. संस्कृतनाटकस्य उद्भवविषये पुत्तलिकानृत्यवादस्य प्रवर्तकः समीक्षको वर्तते-

(a) प्रो. पिशेलः (b) प्रो. वेबरः
(c) प्रो. ल्यूडर्स (d) प्रो. हिलब्राण्डः

Ans.(a) **:** संस्कृतनाटकस्य उद्भवविषये पुत्तलिकानृत्यवादस्य प्रवर्तकः समीक्षको 'प्रो. पिशेलः' वर्तते। संस्कृत नाटक के उद्भव व विकास में पुत्तलिका नृत्य के प्रवर्तक व समीक्षक प्रो. पिशेल महोदय को स्वीकार किया गया है। 'सूत्रधार' तथा 'स्थापक' आदि शब्दों का मूल अर्थ इस मत की पुष्टि करता है।

92. नैषधीयचरित महाकाव्यस्य द्वितीय सर्गे विद्यमाने 'हृतसारमिवेन्दुमण्डलं दमयन्तीवदनाय' इति पद्ये कोऽलङ्कारः प्रयुक्तः ?

(a) उपमा (b) अतिशयोक्तिः
(c) निदर्शना (d) उत्प्रेक्षा

Ans. (d) **:** नैषधीयचरित महाकाव्यस्य द्वितीय सर्गे विद्यमाने 'हृतसारमिवेन्दुमण्डलं दमयन्ती 'वदनाय' इति पद्ये उत्प्रेक्षालङ्कारः प्रयुक्तः । नैषधीयचरित महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में ब्रह्मा ने दमयन्ती के मुख के निर्माण के लिए मानो चन्द्रमा का सार-भाग निकाल लिया है। प्रस्तुत पद्य में उपमेय के साथ उपमान की सम्भावना प्रकट होने से यहाँ उत्प्रेक्षालङ्कार प्रयुक्त है।

93. शिशुपालवध महाकाव्यस्य प्रथमे सर्गे विद्यमाने उदासितारं निगृहीतमानसैः---पुराविदः इति पद्ये कस्य दर्शनस्य तत्त्वं प्रतिपादितम् ?

(a) न्यायदर्शनस्य (b) मीमांसादर्शनस्य
(c) सांख्यदर्शनस्य (d) बौद्धदर्शनस्य

Ans. (c) **:** शिशुपालवध महाकाव्यस्य प्रथमे सर्गे विद्यमाने उदासितारं निगृहीतमानसैः---इति पद्ये सांख्यदर्शनस्य तत्त्वं प्रतिपादितम् शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग में पुरातत्त्व को जानने वाले (कपिल आदि मुनि) उदासीन, विकारों से परे, मूल प्रकृति से पृथक्, अनादि और परमपुरुष आपको (अर्थात् श्रीकृष्ण) (सांख्योक्तपुरुषः) ही मानते हैं। प्रस्तुत पद्य में सांख्यदर्शन का तत्त्व प्रतिपादित किया गया है।

94. 'गुरुः सर्वेभ्यः शिष्येभ्यः समानरूपेण विद्यां वितरति' चर्चेयम् उत्तररामचरिते कयोः पात्रयोः वार्तामध्ये जाता?

(a) सीतारामयोः (b) तमसामुरलयोः
(c) आत्रेयीवनदेवतयोः (d) रामशम्बूकयोः

Ans. (c) **:** 'गुरुः सर्वेभ्यः शिष्येभ्यः समानरूपेण विद्यां वितरति' चर्चेयम् उत्तररामचरिते 'आत्रेयीवनदेवतयो' वार्तामध्ये जाता। गुरु जिस प्रकार व्युत्पन्न शिष्य को उसी प्रकार मन्द-बुद्धि शिष्य को भी शिक्षा देता है। वह उन दोनों (शिष्यों) के ज्ञान में न तो सामर्थ्य की वृद्धि करता है और न सामर्थ्य को नष्ट ही करता है परन्तु (विद्या के) फल में बहुत अधिक अन्तर होता है, जैसे स्वच्छमणि प्रतिबिम्ब को ग्रहण करने में समर्थ होती है, मिट्टी आदि पदार्थ नहीं इसकी चर्चा उत्तररामचरितम् में आत्रेयीवनदेवता के मध्य वार्ता में संग्रहीत है।

95. मृच्छकटिकस्य नान्दीपाठे कस्य देवस्य समाधिना रक्षाकामना कृता?

(a) शङ्करस्य (b) ब्राह्मणः
(c) परब्रह्मणः (d) विष्णोः

Ans.(a): मृच्छकटिकस्य नान्दीपाठे 'शङ्करस्य' देवस्य समाधिना रक्षाकामना कृता।
मृच्छकटिकम् के नान्दीपाठ में पर्यङ्क नामक एक विशेष प्रकार के योगासन की मुद्रा में समाधिस्त भगवान शङ्कर से रक्षा की कामना की गयी है।

96. रत्नावली नाटिकायाः 'यातोऽस्मि पद्मनयने समयो ममैषः' इत्यादि पद्ये कोऽलङ्कारः न प्रयुक्तः?

(a) उत्प्रेक्षा (b) समासोक्तिः
(c) उपमा (d) निदर्शना

Ans. (c) : रत्नावली नाटिकायाः 'यातोऽस्मि पद्मनयने समयो ममैषः' इत्यादि पद्ये 'उपमालङ्कारः' न प्रयुक्तः। रत्नावली नाटिका के यातोऽस्मि पद्मनयने समयो ममैषः इत्यादि पद्य में उपमालङ्कार का प्रयोग नहीं किया गया है। शेष तीनों उत्प्रेक्षा, समासोक्ति व निदर्शना का प्रयोग प्रस्तुत श्लोक में समाहित है जिसका अर्थ है- हे कमलरूप नेत्रों वाली। मैं जा रहा हूँ, यह मेरे जाने का समय है।

97. कादम्बरी-कथामुखस्य चाण्डालकन्यावर्णने सर्वाधिकं सौन्दर्य कस्यालङ्कारस्य परिलक्ष्यते?

(a) श्लेषानुप्राणितायाः उत्प्रेक्षायाः
(b) श्लेषानुप्राणितस्य विरोधस्य
(c) तुल्ययोगितायाः
(d) अप्रस्तुतप्रशंसायाः

Ans. (a) : कादम्बरी-कथामुखस्य चाण्डालकन्यावर्णने सर्वाधिकं सौन्दर्य 'श्लेषानुप्राणितायाः उत्प्रेक्षायाः' परिलक्ष्यते।
कादम्बरी-कथामुख के चाण्डालकन्या के वर्णन में सर्वाधिक सौन्दर्य श्लेष के द्वारा अनुप्राणित उत्प्रेक्षा अलंकार परिलक्षित होता है।

98. 'शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा' कथनमिदम् उद्धृतमस्ति-

(a) रत्नावली नाटिकायाः
(b) मृच्छकटिकात्
(c) उत्तररामचरितात्
(d) प्रतिमानाटकात्

Ans.(d) : 'शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा' प्रतिमानाटकात् उद्धृतमस्ति । अर्थात् शत्रु शरीर पर वार करते हैं लेकिन स्वजन (दायाद) हृदय पर आघात करते हैं यह सूक्तिपरक वाक्य प्रतिमा नाटक से उद्धृत है।

99. नलचम्पू-काव्यस्य रचयिता वर्तते-

(a) भट्टनारायणः (b) भट्टिः
(c) अनन्तभट्टः (d) त्रिविक्रमभट्टः

Ans. (d) : नलचम्पू-काव्यस्य रचयिता 'त्रिविक्रमभट्टः' वर्तते। नलचम्पू काव्य के रचयिता त्रिविक्रमभट्ट हैं। नलचम्पू 'चम्पूकाव्य' के अन्तर्गत समाहित है। संस्कृत साहित्य में चम्पूकाव्य का प्रथम निदर्शन इसी ग्रन्थ में हुआ है, नलचम्पू में सर्वत्र सभङ्ग श्लेष का प्रसाद लक्षित होता है।

100. ----असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः श्लोकांशः कुतः उद्घृतः-

(a) रघुवंशात्
(b) अभिज्ञानशाकुन्तलात्
(c) किरातार्जुनीयात्
(d) शिशुपालवधात्

Ans. (c) : असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः श्लोकांशः 'किरातार्जुनीयात्' उद्धृतः अस्ति। असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः श्लोकांश किरातार्जुनीयम् से उद्धृत है जिसका अर्थ है-धूर्त लोग बिना ढके हुए अङ्गों वाले उन जैसे (निश्छल) लोगों को तीक्ष्ण बाणों के समान भीतर प्रविष्ट होकर मार डालते है। यह कथन द्रौपदी का है।

101. नैषधीयचरित महाकाव्यस्य द्वितीय सर्गे विद्यमाने 'हृतसारमिवेन्दुमण्डलं दमयन्ती वदनाय' इत्यादि पद्ये कोऽलङ्कारः प्रयुक्तः

(a) उत्प्रेक्षा (b) अतिशयोक्तिः
(c) उपमा (d) निदर्शना

Ans. (a) : नैषधीयचरित महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में विद्यमान 'हृतसारमिवेन्दुमण्डलं दमयन्ती वदनाय' इत्यादि पद्य में उत्प्रेक्षा अलङ्कार प्रयुक्त है।
नैषधीयचरित महाकाव्यस्य द्वितीय सर्गे विद्यमाने 'हृतसारमिवेन्दुमण्डलं दमयन्ती 'वदनाय' इति पद्ये उत्प्रेक्षालङ्कारः प्रयुक्तः । नैषधीयचरित महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में ब्रह्मा ने दमयन्ती के मुख के निर्माण के लिए चन्द्रमा का सार-भाग निकाल लिया है। प्रस्तुत पद्य में उपमेय के साथ उपमान की सम्भावना प्रकट होने से यहाँ उत्प्रेक्षालङ्कार प्रयुक्त है।

102. 'श्रुतेरिवार्थस्मृतिरन्वगच्छत् इत्यत्र कोऽलङ्कारः?

(a) उत्प्रेक्षा (b) उपमा
(c) अनन्वयः (d) व्यतिरेकः

Ans. (b) : 'श्रुतेरिवार्थस्मृतिरन्वगच्छत् इत्यत्र उपमालङ्कारः अस्ति। जिस प्रकार श्रुतियाँ वेद का अनुसरण करती हैं उसी प्रकार रानी सुदक्षिणा नन्दिनी गाय का अनुसरण करती हैं।

103. मेघदूते प्रयुक्तं छन्दः अस्ति–

(a) स्रग्धरा (b) वसन्ततिलका
(c) मन्दाक्रान्ता (d) उपेन्द्रवज्रा

Ans. (c) : मेघदूते 'मन्दाक्रान्ता' छन्दः प्रयुक्तमस्ति । सम्पूर्ण मेघदूत में मन्दाक्रान्ता छन्द प्रयुक्त है। मन्दाक्रान्ता छन्द का लक्षण इस प्रकार है-
'मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भौं' नतौ ताद् गुरूचेत्। अर्थात् मन्दाक्रान्ता छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण, तगण, तगण और दो गुरु वर्णों पर यति होती है।

104. अभिज्ञानशाकुन्तले 'न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्' इतीयमुक्तिरस्ति-

(a) विदूषकस्य (b) दुष्यन्तस्य
(c) कण्वस्य (d) विश्वामित्रस्य

Ans. (b) : अभिज्ञानशाकुन्तले 'न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्' दुष्यन्तस्य उक्तिरस्ति। अभिज्ञानशाकुन्तल में 'न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत' यह उक्ति दुष्यन्त के द्वारा कथित है जिसका अर्थ है- रत्न ग्राहक को नहीं खोजा करते हैं ग्राहक ही रत्नों की खोज किया करते है।

**105. ''लिम्पतीवतमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता॥'' श्लोकेऽस्मिन् कोऽलङ्कारः?**

(a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा
(c) निदर्शना (d) उपमोत्प्रेक्षयोः संसृष्टिः

Ans. (b) : ''लिम्पतीवतमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।।''
श्लोकेऽस्मिन् 'उत्प्रेक्षालङ्कारः' अस्ति। प्रस्तुत श्लोक में उत्प्रेक्षालङ्कार है। उत्प्रेक्षालङ्कार का लक्षण इस प्रकार है–
सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्।'' अर्थात् जिस अलङ्कार में उपमेय-उपमान की सम्भावना व्यक्त होती है वहाँ उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है।

106. उत्तररामचरिते छायाङ्कः अस्ति-

(a) द्वितीयोऽङ्क (b) चतुर्थोङ्क
(c) तृतीयोऽङ्क (d) षष्ठोऽङ्क

Ans. (c) : उत्तररामचरिते 'तृतीयोऽङ्क' छायाङ्कः अस्ति। उत्तररामचिरतम् का तृतीय अङ्क छायाङ्क है। इस अङ्क में छायादृश्य भवभूति की मौलिक कल्पना है। इस दृश्य के द्वारा भवभूति ने नाटक में छायानृत्य के तुल्य ही छायादृश्य उपस्थित करने की नवीन योजना रखी है।

**107. ''दुर्लभजनानुरागो लज्जा गुर्वी परवश आत्मा।
प्रियसखि विषमं प्रेम मरणं शरणं केवलमेकम्॥'' इतीयम् उक्तिः अस्ति रत्नावली नाटिकायाम्-**

(a) पद्मावत्याः (b) सुसङ्गतायाः
(c) वासवदत्तायाः (d) सागरिकायाः

**Ans. (d) : ''दुर्लभजनानुरागो लज्जा गुर्वी परवश आत्मा।
प्रियसखि विषमं प्रेम मरणं शरणं केवलमेकम्॥''**
इतीयम् रत्नावली नाटिकायां 'सागरिकायाः' उक्तिः अस्ति। रत्नावली नाटिका में यह उक्ति सागरिका के द्वारा कही गयी है जिसका अर्थ है- दुर्लभ व्यक्ति से (मेरा) प्रेम हुआ है, लज्जा भारी है और शरीर पराधीन है। प्रिय सखी! (ऐसी स्थित में मेरा यह) प्रेम भयानक है (अतएव) केवल मरण (ही मेरा) सब से बढ़कर रक्षक है।

108. पञ्चतन्त्रे जीर्णधनवणिक पुत्रस्य कथा विद्यते-

(a) मित्रभेदे (b) लब्धप्रणाशे
(c) काकोलूकीये (d) मित्रसम्प्राप्तौ

Ans. (d) : पञ्चतन्त्रे जीर्णधनवणिक पुत्रस्य 'कथा मित्रसम्प्राप्तौ' विद्यते। पञ्चतन्त्र में जीर्ण धनवणिक पुत्र की कथा 'मित्रसम्प्राप्ति' में विद्यमान है। मित्र सम्प्राप्ति में अनेक उपयोगी मित्र बनाने एवं नीति पर बल देने के लिए अनुकूल कथाएँ समाहित हैं।

**109. धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभम्
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥
इत्युक्तिः कस्य ग्रन्थस्य विषये वर्तते-**

(a) रामायणस्य (b) महाभारतस्य
(c) विष्णुपुराणस्य (d) रघुवंशस्य

Ans. (b) : धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभम् ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ।।
इत्युक्तिः महाभारतस्य ग्रन्थस्य विषये वर्तते-
अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सम्बन्ध में जो कुछ महाभारत में कह दिया गया है उसके बाद कुछ कहने को शेष नहीं रहता। यह श्लोक महाभारत के आदिपर्व में वर्णित है यह भारतीय साहित्य का आकर-ग्रन्थ है। जिसमें तत्कालीन सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि विषयों का समन्वय है।

110. 'सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः''-इयं सूक्तिर्विद्यते-

(a) अभिज्ञानशाकुन्तले (b) नीतिवाक्यामृते
(c) नीतिशतके (d) पञ्चतन्त्रे

Ans. (c) : 'सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः' जिसका अर्थ है- सेवा करना बहुत ही कठिन काम है योग से भी यह साधना दुष्कर है। यह सूक्ति परक वाक्य नीतिशतक से उद्धृत है।

111. 'अकारणाविष्कृत वैरदारुणादसज्जनात्------सन्निहितं सदामुखो। पद्यमिदम् उद्धृतमस्ति-

(a) नैषधीयचरितात्
(b) कादम्बरीकथामुखात्
(c) हितोपदेशात्
(d) नीतिवाक्यामृतात्

Ans. (b) : 'अकारणाविष्कृत वैरदारुणाद्-----सन्निहितं सदामुखो। 'कादम्बरीकथा मुखात्' पद्यमिदम् उद्धृतमस्ति।
'अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात्' प्रस्तुत सूक्ति वाक्य महाकवि बाणभट्ट कृत कादम्बरी कथामुखम् से अवतरित है।
जिसका अर्थ है -बिना कारण के ही बैर की उद्भावना करने वाले इस दुष्ट मनुष्य से किसे भय नहीं होता।

112. '-----निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः' सूक्तिरियम् उद्धृताऽस्ति-

(a) कादम्बरीकथामुखात्
(b) अभिज्ञानशाकुन्तलात्
(c) नीतिशतकात्
(d) हितोपदेशात्

Ans. (c) : 'निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः' सूक्तिरियम् 'नीतिशतकात्' उद्धृताऽस्ति। निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः यह सूक्ति भर्तृहरि कृत 'नीतिशतकम्' से ली गयी है। जिसका अर्थ है-अपने मन में सन्तुष्ट रहने वाले सन्त जन संसार में कितने हैं अर्थात् संसार में अपने आप में सन्तुष्ट रहने वाले महापुरुषों की संख्या यद्यपि कम ही है।

113. 'कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम् इति उपमा सूचकेन वाक्येन शिशुपालवधे लक्षितः-

(a) श्रीकृष्णः (b) शिशुपालः
(c) हिरण्यकशिपुः (d) नारदः

Ans. (d) : 'कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम्' इति उपमा सूचकेन वाक्येन शिशुपालवधे लक्षितः-नारदः। कुथेन नागेन्द्रमिवेन्द्रवाहनम् इस उपमा सूचक वाक्य के द्वारा शिशुपालवध में नारदमुनि को लक्षित किया गया है। जिसमें नारद मुनि की उपमा इन्द्रवाहन ऐरावत से की गयी है।

114. शिवराजविजये यवनयुवकस्य वधः कृतः–

(a) श्यामबटुना (b) गौरबटुना
(c) गौरसिंहेन (d) शिववीरेण

Ans. (b) : शिवराजविजये यवनयुवकस्य वधः 'गौरबटुना' कृतः ।
शिवराजविजय में यवनयुवक का वध गौरवटु ने किया। इसका उल्लेख अम्बिकादत्तव्यास कृत 'शिवराजविजयम्' के प्रथम निःश्वास में मिलता है।

115. धिगस्तु तृष्णातरलं भवन्मतः' इति श्लोकांशो वर्तते-

(a) उत्तररामचरिते
(b) नैषधीयचरिते
(c) शिशुपालवधे
(d) मृच्छकटिके

Ans. (b) : 'धिगस्तु तृष्णातरलं भवन्मतः' इति
श्लोकांशो नैषधीयचरिते वर्तते।
जिसका अर्थ है-हे राजन ! मेरे सोने के पंखों को देखकर लोभ से चञ्चल हुए आपके मन को धिक्कार है नैषधीयचरितम् में यह कथन हंस के द्वारा कहा गया है।

116. योऽस्यां पाणिं ग्रहीष्यति स सार्वभौमो राजा भविष्यति' रत्नावल्याम् उक्तिरियं वर्तते–

(a) विदूषकस्य
(b) यौगन्धरायणस्य
(c) काञ्चनमालायाः
(d) सिद्धस्य

Ans. (b) : योऽस्यां पाणिं ग्रहीष्यति स सार्वभौमो राजा भविष्यति- रत्नावल्यां 'यौगन्धरायणस्य' उक्तिरियं वर्तते।
रत्नावली में यह उक्ति यौगन्धरायण के द्वारा कही गयी है।

117. मृच्छकटिके विदूषकस्य नाम अस्ति-

(a) माधव्यः (b) कपिञ्जलः
(c) वसन्तकः (d) मैत्रेयः

Ans. (d) : मृच्छकटिके विदूषकस्य नाम मैत्रेयः अस्ति। शूद्रक कृत मृच्छकटिकम् में विदूषक का नाम मैत्रेय है, जबकि माधव्य अभिज्ञान शाकुन्तलम् का विदूषक है, तथा वसन्तक-रत्नावली व स्वप्नवासव दत्तम का विदूषक है तथा कपिञ्जल कादम्बरी का पात्र है।

118. 'यस्यास्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य'-इयं सूक्तिः कुतः समासादिता-

(a) सूक्तिरत्नाकरात्
(b) हर्षचरितात्
(c) नैषधीयचरितात्
(d) नीतिशतकात्

Ans. (d) : 'यस्यास्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य'-इयं सूक्तिः नीतिशतकात् समासादिता।
पूर्व जन्मार्जित सुकर्मो से सर्वत्र अनुकूलता ही प्राप्त होती है। यह सूक्तिपरक वाक्य भर्तृहरि कृत नीतिशतकम् में कही गयी है तात्पर्य यह है कि जिस मनुष्य ने पूर्व जन्म में बहुत पुण्य जमा कर रखा है, उसके लिए भयङ्कर वन अच्छा नगर हो जाता है, सब लोग उसके अपने आत्मीय हो जाते हैं। सारी पृथ्वी उसके लिए रत्नों से परिपूर्ण हो जाती है।

119. ''यस्य च परलोकाद्भयम्......मकरध्वजे चापध्वनिरभूत' गद्यांशोऽयं कुतः उद्धृतः–

(a) वासवदत्तायाः
(b) कादम्बरीकथामुखात्
(c) हर्षचरितात्
(d) उपर्युक्तेषु न कुतोऽपि

Ans. (b) : ''यस्य च परलोकाद्भयम्----
मकरध्वजे चापध्वनिरभूत' गद्यांशोऽयं कादम्बरीकथामुखात् उद्धृतः अस्ति।

120. ''------व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम् ॥'' श्लोकांशोऽयम् कुतः उद्धृतः?

(a) नैषधीयचरितात्
(b) किरातार्जुनीयात्
(c) शिशुपालवधात्
(d) मेघदूतात्

Ans. (c) : ''------व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम् ।।'' श्लोकांशोऽयम् 'शिशुपालवधात्' उद्धृतः अस्ति। प्रस्तुत श्लोक शिशुपालवध से उद्धृत है। जिसमें भगवान श्री कृष्ण के मुख से नारद जी के दर्शन का महत्व बतलाया गया है। श्री कृष्ण कहते हैं कि आपका दर्शन शरीरधारियों की तीनों काल में भी पवित्रता प्रकट करता है, वर्तमान काल में पाप को विनष्ट करता है, आने वाले मङ्गल का कारण बनता है और (वह स्वयं) पहले किए हुए पुण्यों से प्राप्त होता है।